भारत का कृषि जलवायविक प्रदेश
Agro Climatic Region of India

बोलेन्द्र कुमार अगम,
सहायक प्राध्यापक भूगोल,
राजा सिंह कॉलेज सिवान

गतांक से आगे.....

2. उत्तर-पूर्वी प्रदेश

इसका विस्तार उत्तर पूर्वी भारत के 7 राज्यों असम, अरुणाचल प्रदेश, मेघालय, मणिपुर, मिजोरम, नागालैंड और त्रिपुरा में है । प्रमुख विशेषताओं में उबड़-खाबड़ भूमि, पर्याप्त वर्षा (200 सेमी से अधिक) उच्च सापेक्षिक आर्द्रता तथा नदी घाटियों एवं पहाड़ी स्थानों पर विभिन्न प्रकार की मिट्टी । प्रमुख फसल चावल और असम की घाटियों में चाय की खेती की जाती है । इसके अतिरिक्त पटसन, नारंगी, अमरुद, मक्का तथा सब्जियां उगाई जाती हैं । बहुत से क्षेत्र में स्थानांतरित कृषि की जाती है जिसे झूम कहते हैं । इसमें भूमि के टुकड़े से वन को काटकर जलाकर साफ करके फसलें उगाई जाती है । कुछ वर्षों बाद जब मिट्टी की उपजाऊ शक्ति कम हो जाती है तो उस भूमि के टुकड़े को छोड़कर दूसरे स्थान पर वनों को साफ करके कृषि की जाती है । इस प्रकार स्थानान्तरी कृषि से वन तथा मृदा का विनाश होता है और इसलिए इस कृषि को नियंत्रित करने की आवश्यकता है ।

3. सतलुज यमुना मैदान

इस प्रदेश में पंजाब तथा हरियाणा का अधिकांश भाग सम्मिलित है । यहां पर महाद्वीपय प्रकार की जलवायु पाई जाती है । वार्षिक तापांतर बहुत अधिक होता है । मई-जून में कई स्थानों पर दिन का तापमान 45°C से भी ऊपर हो जाता है और दिसंबर-जनवरी में रात्रि के समय तापमान हिमांक तक पहुंच जाता है । वार्षिक वर्षा 50-80 सेमी तक होती है । अधिकांश वर्षा ग्रीष्मकाल में दक्षिण-पश्चिम मानसून पवनों द्वारा होती है परंतु कुछ शीतकालीन वर्षा पश्चिमी विक्षोभ से भी हो जाती है । नदियों द्वारा बिछाई गई उपजाऊ कांप मिट्टी से युक्त यह प्रदेश मिट्टी की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण हैं । यहां सिंचाई के लिए नहरों का जाल बिछा हुआ है । कूपों/नलकूपों द्वारा भूजल का प्रयोग भी किया जाता है । गेहूं, कपास, चावल, गन्ना,मक्का, जौ, चना, फलियाँ तथा तिलहन महत्वपूर्ण फसलें हैं । इस क्षेत्र में डेयरी व्यवसाय ने भी बहुत उन्नति की है और यह एक महत्वपूर्ण आर्थिक क्रिया है ।

हरित क्रांति का सर्वाधिक प्रभाव इसी क्षेत्र पर पड़ा है और इसके अंतर्गत गेहूं के उत्पादन में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है । सिंचाई की सुविधा से चावल की कृषि को भी बड़ा प्रोत्साहन मिला है । अब किसानों का रुझान फलों व सब्जियों की ओर अधिक आकर्षित हो रहा है क्योंकि इन फसलों से किसानों को अधिक धन मिलता है ।

4. गंगा का ऊपरी मैदान

इस प्रदेश में उत्तर प्रदेश का गंगा-यमुना दोआब तथा रोहिलखंड व लखनऊ डिवीजन आते हैं । नदियों के द्वारा निक्षेपित उपजाऊ मिट्टी से बना यह समतल मैदानी भाग है जहां उप-आर्द्र जलवायु पाई जाती है । यहां शीतकालीन तापमान लगभग 10-15°C होता है जो ग्रीष्मऋतु में बढ़कर 45°C हो जाता है । औसत

वार्षिक वर्षा 65-120 सेमी होती है । मई तथा जून महीने में आंधियां चलती हैं जिससे तापमान में कुछ कमी आ जाती है । लगभग 80% वर्षा ग्रीष्मकालीन दक्षिण-पश्चिम मानसून द्वारा होती है । शीतऋतु में अल्प वर्षा पश्चिमी विक्षोभ द्वारा होती है । इस प्रदेश में नहरों तथा नलकूपों द्वारा सिंचाई की पर्याप्त व्यवस्था है । चावल, गन्ना, मक्का, दालें तथा मोटे अनाज खरीफ की फसलें हैं । रबी की फसलों में गेहूं, तिलहन, दलों तथा सब्जियों का महत्वपूर्ण स्थान है । आम, अमरूद, नाशपाती, लीची आदि फलदार बागानों को भी प्रोत्साहित किया जा रहा है।

5. गंगा का मध्य मैदान

इस प्रदेश का विस्तार उत्तर प्रदेश के पूर्वी भाग तथा बिहार में है । कांप मृदा से बना यह मंद ढाल वाला समतल मैदान है । यहां पर गर्म व आर्द्र ग्रीष्मऋतु का अधिकतम औसत तापमान लगभग 40°C तथा शीतऋतु में न्यूनतम औसत तापमान 5°C होता है । औसत वार्षिक वर्षा 100-150 सेमी होती है और अधिकांश वर्षा बंगाल की खाड़ी से आने वाली मानसूनी पवनों द्वारा होती है । यहां की खरीफ फसलों में चावल, मक्का, दालें, गन्ना तथा साग-सब्जियां हैं । रबी की फसलों में गेहूं, चना, तिलहन तथा साग-सब्जियां प्रमुख हैं । यहां आम, लीची, अमरूद, केला आदि फल भी उगाए जाते हैं ।

6. गंगा का निचला मैदान

पश्चिम बंगाल में स्थित गंगा का डेल्टा प्रदेश इसका अभिन्न अंग है । नदियों द्वारा निक्षेपित कांप की मिट्टी से निर्मित यह प्रदेश अति मंद ढाल वाला है और गोखुर झीलों एवं पृष्ठ जल प्रवाह से ग्रस्त हैं । उष्ण-आर्द्र जलवायु वाले इस प्रदेश में जनवरी तथा जुलाई का तापमान क्रमशः 12-18°C तथा 25-30°C होता है । वार्षिक वर्षा 100-200 सेमी होती है । यहां की उपजाऊ मिट्टी तथा उष्ण-आर्द्र जलवायु चावल तथा पटसन की कृषि के लिए बहुत ही अनुकूल है । इस प्रदेश के कुछ इलाकों में वर्ष में चावल की तीन (अमन, औस व बोरा) फसलें ली जाती है । हुगली बेसिन जूट के लिए विश्व भर में विख्यात है । यहां पर शीतऋतु में गेहूं की खेती भी होने लगी है । विभिन्न प्रकार के उष्णकटिबंधीय फल भी उत्पन्न किए जाते हैं । इसमें आम, अमरूद, नारियल, सुपारी आदि प्रमुख है । कई किसान जलाशयों तथा पोखरा में मत्स्य पालन का भी काम करते हैं ।

7. दक्षिण पूर्वी पठारी प्रदेश

इसमें समस्त छोटानागपुर पठार, बघेलखंड तथा महानदी बेसिन के भाग सम्मिलित हैं । यह उष्ण व आर्द्र वाले जलवायु वाला प्रदेश है जहां औसत वार्षिक वर्षा 125 सेंटीमीटर होती है । ग्रीष्म तथा शीतकालीन तापमान क्रमश: 15°C तथा 30°C होता है । उपजाऊ मिट्टी केवल महानदी बेसिन में ही है । शेष भाग में लेटराइट तथा लाल मिट्टियाँ है जो अधिक उपजाऊ नहीं है । छोटा नागपुर में दोन घाटियों की उपजाऊ मिट्टी चावल की कृषि के लिए उपयुक्त है । रबी की फसलों में चना तथा चारा बोया जाता है । असिंचित भाग को प्रायः परती छोड़ दिया जाता है ।

.....क्रमशः

- सन्दर्भ: TMH भूगोल डी० आर० खुल्लर, एनसीईआरटी, इन्टरनेट